श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - १०

मार्च 2025

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. हाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना अनिवार्य है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नहीं जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगे, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरूरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. जीवन में जाने-अंजाने हो गये ..... की निंदा करे।
२. महाआरंभ और महापरिग्रह में आसक्त और..... मनुष्य नरक का आयुष्य बांधता है।
३. जो पर्व तिथि आदि देखकर भोजन के लिये आये उसे ..... कहा जाता है।
४. इसी कारण से सर्वथा..... होकर धर्म वैराग्य भावना से निद्रा लेनी चाहिये।
५. ..... जन्म मरण रहित आत्मा की मुक्तावस्था मानने को ही वे तैयार नहीं थे।
६. हम जिस जंबुद्वीप में रहते है, उसमें भी अनेकानेक शाश्वत-अशाश्वत..... रहे हुए है।
७. अनशन लेने से होने वाले सन्मान-सत्कार देखकर बहुत काल तक जीने की अभिलाषा करना वो ..... अतिचार है।
८. जो मोक्षार्थी हो उसे ..... तजकर मोक्ष दिलवाने वाले अनुष्ठानों में ही ओतप्रोत बन मोक्ष साधना चाहिये।
९. परनिंदा, अहंकार, प्रमादि, पंच, परमेष्ठि की आशातना अवज्ञा करने वाला जीव..... बांधता है।
१०. ..... इस निद्रा को घटाने और सुधारने में सतत प्रयत्नशील होते है।
११. माया को सरलता से और लोभ को संतोष से जीतना वह ..... है।
१२. तुम ..... को अथवा जगत विस्तरीत कीर्ति की इच्छा रखते हो तो तीन लोक का उद्धार करने वाले जिनवचन में श्रद्धा करो।
१३. शिखरी और चुल्लहिमवंत पर्वत सौ योजन ऊंचे है और..... है।
१४. धर्म में अस्थिर आचरणवाला जीव..... कर्म बांधता है।
१५. अतिचार न लगे एवं व्रत शुद्ध बने यह..... का सूचक है।
१६. उत्तम शरीर के धारक आपश्री..... आत्मा थे।
१७. ..... यानि देवगुरु का घात करना, हत्या करना, मार मारना।
१८. अजित-शांति स्तव को दोनों काल पढे, सुने तो पूर्व में हुए रोग भी ..... हो जाते है।
१९. अंतिम क्षण को भी साधना पडेगा ..... को भी अंत में स्वीकार करना पडेगा।
२०. अविरत सम्यगदृष्टि, देशविरति और सर्व विरति-सराग संयमी जीव देव, गुरु, धर्म के प्रति राग के कारण..... बांधते है। १५

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -

१. वीर प्रभु के सबसे छोटी उम्र के युवा गणधर कौन थे ?
२. गुरु के वचनों से विपरीत प्ररुपणा करने वाला क्या कहलाता है ?
३. मैं परभव में इन्द्र या चक्रवर्ती बनूं ऐसी अभिलाषा का मन का व्यापार करना कौनसा अतिचार है ?
४. जहां भी नजर पडे वंहा से गुणों को ही ग्रहण करे वह क्या कहलाता है ?
५. किसका निवारण करने हेतु अजित शांति स्तव को अवश्य पढना चाहिये ?
६. जहां काल प्रवर्तमान हो वह क्षेत्र क्या कहलाता है ?
७. श्रावक भूखा रहेगा ऐसा भय से कुछ वोहरा कर चले जाय तो वो कौनसा अतिचार जानना ?
८. जो विधिपूर्वक शयन करता है उसे क्या प्राप्त होती है ?
९. गूढ हृदयवाला, शठ एवं सशल्य जीव कौनसी गति का आयुष्य बंध करता है ?
१०. उसी भव में मोक्ष में जाने वाला क्या कहलाता है ?
११. हमारी काया कौनसी वर्गणा से बनी हुई है ?
१२. अतिथि संविभागव्रत में यदि साधु-साध्वीजी भगवंत का योग न हो तो किसे खाना खिलाना चाहिये ?
१३. सर्वज्ञो के वचन में क्या नहीं करना चाहिये ?
१४. कसौटी में भी धर्म में स्थिर रहे वह कौन है ?
१५. नीलवंत पर्वत कैसा है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) मंदर २) अनन्तर ब्रह्म ३) पव्वतं ४) मयरहिओ ५) निट्ठतं ६) कणयमया ७) विग्घेण ८) तुण ९) सकोसे
१०) पओस ११) प्रेतवने १२) विवज्जयओ १३) पुणभवाणं १४) पमाओ १५) उच्चिट्ठो १६) वयणस्स १७) मूल
१८) विवागो १९) सत्वानां २०) प्राकू

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) प्रत्यनीक	१) चंदन	६) माया	६) तपनीय
२) परमब्रह्म	२) सागारी अनशन	७) सुगंधित चूर्ण	७) सत्यज्ञान
३) दक्षिण	३) ढंकना	८) दृष्कृत्य निंदा	८) धनलाभ
४) उपधि	४) दर्शन मोहनीय	९) पिधान	९) लक्ष्मणा साध्वी
५) ढाई द्वीप	५) सामग्री	१०) निषद्य	१०) मनुष्य क्षेत्र

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. वीर प्रभु ने कितने ब्राह्मणों को दीक्षा दी ?
२. दर्शनावरणीय कर्म बंध के कितने विशेष हेतु बताये गये हैं ?
३. परव्यपदेश नामक अतिचार कौनसे नंबर का अतिचार है ?
४. श्रीहरिभद्रसूरि ने कितने द्वारों से हमें जंबूद्वीप से परिचित करवाया है ?
५. नामकर्म की कुल कितनी प्रकृतियां है ?
६. श्री प्रभासस्वामी किस उम्र में मोक्ष को सिधाये ?
७. आठ मुख्य कर्मों के उत्तर भेद कितने है ?
८. हिमवंत की चार नदियां मूल में कितने योजन की है ?
९. धर्मदेशना करने के कितने मीनिट बाद श्रावक को विधिपूर्वक अल्प नींद लेनी चाहिये ?
१०. श्री प्रभास स्वामी कितने वर्ष तक छद्मस्थ अवस्था में रहे ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (✗) बताओ - १०

१. हमें अपनी नींद बढाकर जीवन के कार्यशील पल बढाना चाहिये ।
२. मन वचन काया के योग को शुभ प्रवृत्ति में से दूर करके, अशुभ प्रवृत्ति में जोडना भी योग है ।
३. उनका कीर्तन करते पुरुषो के सर्व पाप शांत हो जाते है और पुण्य बढता है ।
४. उस संविभागित अन्न का यति को दान देना उसे अतिथि संविभाग कहा जाता है ।
५. प्रभु ने प्रभास गणधर को मुख्य रखकर गच्छ की अनुज्ञा दी ।
६. अंतिम समय में सारी आसक्तियों से रहित बन सम्पूर्ण समाधि बनाये रखना ।
७. समय पर नींद लेने वाला सुख और आयुष्य दोनों का ह्रास करता है ।
८. हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन और परिग्रहादि में आसक्त जीव अंतराय कर्म उपार्जन करता है ।
९. समय क्षेत्र में ही मनुष्य के जन्म मरण होते है ।
१०. पश्चिम में सिर करने से हानि एवं मृत्यु होती है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. जो अग्निहोत्र है वो ज़रामर्य है यानि आजीवन अग्निहोत्र करना चाहिये ।
२. सुकृत की अनुमोदना करने से पुण्य में वृद्धि होती है ।
३. आहार वोहराने में भी शुद्धि सम्हालना एवं भाव विशुद्ध रखना अत्यन्त अनिवार्य है ।
४. नींद और आलस बढाने से बढते है और घटाने से घटते है ।
५. परमात्मा की पूजा करने से उपसर्गो का क्षय हो जाता है ।
६. दूसरों का हित करने की भावना से दान की रुचिवाला हो ।
७. हमारे प्रतिक्रमण को ज्यादा से ज्यादा शुद्ध बनाने जागृत बनने का है ।
८. काल के अनुसार उसमें फेरबदल होता रहता है ।
९. अहंकार रहित हो, नम्रता-विनय गुणवाला होता हैं ।
१०. इतनी छोटी उम्र में वे शास्त्रार्थ सभाओ में चर्चा करने जाते थे ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. दर्शन मोहनीय कर्म किन कारणो से बंधता है ? २) अतिथि संविभाग व्रत किस तरह किया जाता है ?
३. श्री प्रभासस्वामी की शंका का समाधान प्रभु ने किस तरह किया ?
४. निद्राधीन होने से पूर्व श्रावक के क्या कर्तव्य है और क्यों करना चाहिये ? ५) संलेषणा के अतिचार कौनसे है, किसी दो को बतलाईये ?

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com